

---

## इकाई 22 लोक नीति की वितरणात्मक भूमिका

---

### संरचना

#### 22.0 उद्देश्य

#### 22.1 विषय प्रवेश

#### 22.2 अभीष्टतम कराधान नियम

##### 22.2.1 कर की नितांत हानि

##### 22.2.2 रामसे का कर नियम

##### 22.2.3 कोष की सीमांत दक्षता लागत (MECFs)

#### 22.3 वितरणात्मक भूमिका के मूल्यांकन हेतु परिमाणात्मक उपाय

##### 22.3.1 लॉरेंज़ वक्र

##### 22.3.2 संकेंद्रण वक्र

##### 22.3.3 ऐंजल वक्र

#### 22.4 लोक नीति और निर्धनता

##### 22.4.1 उपभोग प्रबलता वक्र

##### 22.4.2 निर्धनता परीक्षण

#### 22.5 सार-संक्षेप

#### 22.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें

#### 22.7 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

---

### 22.0 उद्देश्य

---

प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के बाद, आप इस योग्य होंगे कि :

- लोक नीति में वितरणात्मक भूमिका के निहितार्थ बता सकें;
- कर की नितांत हानि संबंधी संकल्पना सोदाहरण समझा सकें;
- सामाजिक क्षेम फलन का विश्लेषण, उसके समता एवं दक्षता संभागों के रूप में कर सकें;
- यह दर्शाते हुए कि लोक नीति किस प्रकार सुनिश्चित कर सकती है कि निर्धनता परिवारों को अपेक्षाकृत अधिक भारमान दिया जाए, 'कोष की लागत संबंधी सीमांत दक्षता' को परिभाषित कर सकें;
- किसी कर नीति की वितरणात्मक भूमिका के प्रभाव का मूल्यांकन करने हेतु विभिन्न परिमाणात्मक उपायों के सापेक्ष लाभों पर चर्चा कर सकें;
- ऐंजल वक्र के दो अनुप्रयोग निरूपित कर सकें; तथा
- क्रम 's' की किसी 'उपभोग प्रबलता' वक्र को परिभाषित कर सकें और किसी कर-सुधार के s-क्रम निर्धनता सुधारकारी होने के लिए आवश्यक एवं पर्याप्त शर्त प्रदान कर सकें।

## 22.1 विषय प्रवेश

बाजार विफलता के समय हस्तक्षेप के अलावा, सरकार असमानताएँ कम करने हेतु उचित नीति अभिकल्पित कर न्यायोचित आर्थिक क्षेम सुनिश्चित करने में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वह राजकीय शिक्षा, स्वास्थ्य योजनाओं, सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रमों, वृत्तिका योजनाओं, आदि के पक्ष में एक प्रमुख औचित्य साधन है। उत्तम नीतियों के अभिकल्प में अभीष्ट परिणाम प्राप्त करने में विफलताओं हेतु उत्तरदायी कारकों की समझ भी अपेक्षित होती है।

बाजार द्वारा दक्षतापूर्वक संसाधन आवंटित किए जाने के बावजूद अन्यायपूर्ण वितरण दृष्टिगत हो सकता है। दूसरे शब्दों में, आर्थिक दक्षता और असमानता किसी भी अर्थव्यवस्था में साथ-साथ नज़र आ सकती हैं। ऐसी स्थिति में, एक समूह से दूसरे समूह को संसाधन पुनर्वितरित कर आर्थिक क्षेम बढ़ाया जा सकता है, जिससे असमानताएँ कम होंगी। शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक सुरक्षा लाभ, आदि के सार्वजनिक प्रावधान हेतु तर्क इसी आधार पर दिया जाता है। यही नीति अभिकल्प का समतावादी स्वरूप है। समता और दक्षता में निरंतर संघर्ष रहता है। कोई भी दक्ष परिणाम प्रायः विषमताकारी होता है जबकि एक समतापूर्ण परिणाम भी विकृतियों एवं अनुत्साहनों की ओर प्रवृत्त कर सकता है। अभीष्टतम नीति अभिकल्प इन दोनों के बीच सही संतुलन साधने का प्रयास करता है। इन दोनों के बीच संतुलन प्रयास के निर्धारक तत्व किसी भी नीति अभिकल्प के लिए महत्वपूर्ण कारक सिद्ध होते हैं।

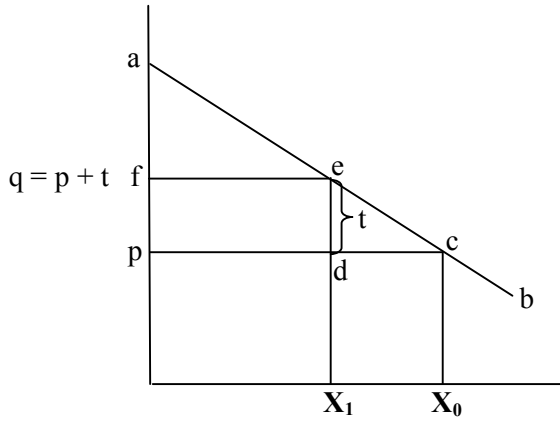
## 22.2 अभीष्टतम कराधान नियम

सरकार अपना राजस्व एकमुश्त कर अथवा वस्तु कर या आय कर थोपकर बढ़ा सकती है। वस्तु कर वह कर है जो वस्तुओं और सेवाओं के क्रय पर लगाया जाता है। ऐसे कराधान की त्रुटि यह है कि इससे उत्पादक को मिलने वाली कीमत और उपभोक्ताओं द्वारा चुकाए जाने वाले दाम के बीच एक खाई उत्पन्न हो जाती है— वह अर्थव्यवस्था में विकृतियाँ पैदा कर देती है। इस प्रकार के कराधान के निहितार्थ अदक्ष ही होते हैं, जहाँ एक मुश्त कर गैर-विरूपणकारी रहते हैं। वस्तु कर उपभोक्ताओं को उनके द्वारा चुकाए जाने वाले 'दाम' पर प्रभाव के माध्यम से और उत्पादकों को उनकी 'लागत' बढ़ाकर प्रभावित करते हैं।

मान लीजिए सरकार केवल वस्तु कर लगाकर राजस्व में कोई वृद्धि करना चाहती है। कर दरों का ऐसा विकल्प जो समाज को होने वाली क्षेम हानि को न्यूनतम कर दे, विख्यात 'दक्ष कराधान के रामसे निर्मेय' द्वारा सुझाया गया है। किसी अभीष्टतम कर नीति की बेहतर समझ के लिए समता संबंधी मुद्दों के साथ-साथ दक्षता संबंधी मुद्दों पर भी विचार किया जाना चाहिए। रामसे नियम इस प्रकार की अभीष्टतम कर नीति के विकल्प को समझने में हमारी मदद करता है। इससे पहले कि हम रामसे नियम समझना शुरू करें, आइए, 'कर की नितांत हानि' संबंधी संकल्पना को समझें।

### 22.2.1 कर की नितांत हानि

कोई भी आर्थिक अभिकर्ता वस्तु कराधान के प्रत्युत्तर में अपनी उपभोग योजना बदल सकता है; यथा कोई भी व्यक्ति अपनी वस्तु-माँग को उच्च करारोपित वस्तु से निम्न करारोपित वस्तु की ओर मोड़ सकता है। यही है— वस्तु कराधान का प्रतिस्थापन प्रभाव अथवा कर-प्रेरित विकृति। वस्तु कर सरकारी राजस्व बढ़ा तो देता है, परंतु वह उपभोक्ता क्षेम को घटा भी देता है। कर की नितांत हानि ही वह सीमा है जहाँ तक उपभोक्ता क्षेम सरकार की राजस्व वृद्धि के सापेक्ष कम हो जाता है। इस संकल्पना को चित्र 22.1 में दर्शाया गया है।



चित्र 22.1 : कर की नितांत हानि

कर-पूर्व दशा में, वस्तु की कीमत 'p' है और उपभुक्त मात्रा है  $X_0$  (चित्र 22.1)। उपभोक्ता अधिशेष त्रिभुज 'apc' है। जब वस्तु पर 't' की दर से कोई विशिष्ट कर लगाया जाता है तो कीमत बढ़कर हो जाता है  $q = p + t$  और उपभुक्त मात्रा गिरकर  $X_1$  पर आ जाती है। उपभोग में यह गिरावट उपभोक्ता अधिशेष को घटाकर 'aqe' कर देती है। यह कर राजस्व को बढ़ाकर  $tX_1$  के बराबर कर देता है जो कि क्षेत्र 'deqp' द्वारा दर्शाया गया है। मूल उपभोक्ता अधिशेष का वह भाग जो कर राजस्व में नहीं बदला, चित्र 22.1 में त्रिभुज 'edc' द्वारा इंगित नितांत हानि (DWL) कहलाता है।

त्रिभुज 'edc' =  $\frac{1}{2}t dX$ , जहाँ  $dX = X_0 - X_1$ . अब चूँकि

$$e^d = \frac{dX}{dp} \frac{p}{X_0} \quad (22.1)$$

इसका अर्थ है कि 
$$dX = e^d \frac{X_0}{p} dp = e^d \frac{X_0}{p} t \quad (22.2)$$

जहाँ लोच अचर पद में व्यक्त की जाती है। तदनुसार, DWL का अनुमान निम्नलिखित पद द्वारा किया जा सकता है—

$$DWL = \frac{1}{2} e^d \frac{X_0}{p} t^2 \quad (22.3)$$

इस प्रकार, 'नितांत हानि' कर की दर (t) के वर्ग और माँग की लोच के समानुपातिक होती है। कर दर में वृद्धि के साथ नितांत हानि तेज़ी से बढ़ती है। किसी भी ज्ञात कर परिवर्तन के लिए, माँग की लोच जितनी अधिक होती है, नितांत हानि उतनी ही अधिक होती है।

### 22.2.2 रामसे का कर नियम

रामसे नियम अभीष्टतम कराधान सिद्धांत में एक प्राचीनतम नियम है। यह कराधान के समताकारी स्वरूप पर ध्यान न देते हुए केवल दक्षता पर विचार करता है। इसे निम्नवत् लिखा जाता है—

$$\sum_i t_i S_{ki} = - \left[ 1 - \frac{\alpha}{\lambda} - \sum_i t_i \frac{\partial x_i}{\partial I} \right] x_k \quad (22.4)$$

जहाँ  $S_{ki}$  कीमत परिवर्तन (अनधिमान वक्र के एक छोर से दूसरे छोर तक विचलन) का प्रतिस्थापन प्रभाव मापता है और दाएँ पक्ष में ऋण सिद्ध चिन्ह कीमत में परिवर्तन के विपरीत चल रहा 'प्रतिस्थापन प्रभाव' इंगित करता है।

सर्वप्रथम कर-शून्य स्थिति पर विचार करें, यथा  $t_i = 0$ । अब समीकरण (22.4) का बायाँ पक्ष (LHS)  $t_i$  में अल्प परिवर्तन हेतु प्रतिपूर्ति मॉग में परिवर्तन का कुल योग कर देता है। रामसे नियम की मानक व्याख्या यह है कि आरंभिक मॉग ( $x_k$ ) के सापेक्ष प्रतिपूर्ति मॉग में परिवर्तन सभी वस्तुओं के लिए स्थिर होना चाहिए वह वस्तु स्वभावतः गरीबोन्मुखी हो अथवा अमीरोन्मुखी। तदनुसार, रामसे नियम में समता सम्मिलित नहीं है और यह केवल दक्षता मापदंड ही दर्शाता है। यह मुख्यतः इसलिए है कि यहाँ केवल एक ही उपभोक्ता पर विचार किया गया है। यदि हम दो उपभोक्ताओं पर विचार करें तो प्रत्येक उपभोक्ता का उपयोगिता फलन निम्नवत् होगा –

$$U^h = U^h(x_0^h(q), x_1^h(q), x_2^h(q)) \quad (22.5)$$

जहाँ  $x_0^h$   $h$ वें परिवार की कर मुक्त श्रमिक आपूर्ति है, वेतन एक इकाई है और  $q$  कीमतों का सदिश है। सरकारी राजस्व निम्नवत् दर्शाया जाता है—

$$R = \sum_{i=1}^2 t_i x_i^1(q) + \sum_{i=1}^2 t_i x_i^2(q) \quad (22.6)$$

सरकारी नीति का अभिकल्प 'सामाजिक क्षेम फलन' से तैयार किया जाता है जो कि वैयक्तिक उपयोगिताओं का योगफल होता है। अतः **सामाजिक क्षेम फलन** इस प्रकार होगा—

$$W = W(U^1, U^2) \quad (22.7)$$

कर दरें चुनने में सरकार की समस्या लैंगरेंजियन पद द्वारा निरूपित की जा सकती है—

$$\max_{\{t_1, t_2\}} L = W(U^1(x_0^1(q), x_1^1(q), x_2^1(q)), U^2(x_0^2(q), x_1^2(q), x_2^2(q))) + \lambda \left[ \sum_h \sum_i t_i x_i(q) - R \right] \quad (22.8)$$

वस्तु  $k$  पर कर के लगाने हेतु प्रथम-क्रम शर्त होगी—

$$-\frac{\partial W}{\partial U^1} \alpha^1 x_k^1 - \frac{\partial W}{\partial U^2} \alpha^2 x_k^2 + \lambda \left[ \sum_{h=1}^2 \left[ x_k^h + \sum_{i=1}^2 t_i \frac{\partial x_i^h}{\partial q_k} \right] \right] = 0 \quad (22.9)$$

जहाँ  $\frac{\partial U^h}{\partial x_0^h} = \alpha^h$  आय की सीमांत उपयोगिता है और  $\lambda$  किसी इकाई सरकारी राजस्व की उपयोगिता लागत है।

प्राचल  $\beta^h = \frac{\partial W}{\partial U^h} \frac{\partial U^h}{\partial x_0^h} = \frac{\partial W}{\partial U^h} \alpha^h$  ही  $h$ वें उपभोक्ता की उपयोगिता के सामाजिक क्षेम पर प्रभाव और उसकी आय की सीमांत उपयोगिता का गुणनफल है। इसीलिए, इसे 'उपभोक्ता  $h$  की आय की सामाजिक सीमांत उपयोगिता' भी कहा जाता है और समीकरण (22.9) को पुनः निम्नवत् लिखा जा सकता है—

$$\frac{\sum_{i=1}^2 t_i S_{ki}^1 + \sum_{i=1}^2 t_i S_{ki}^2}{x_k^1 + x_k^2} = \frac{1}{\lambda} \frac{\beta^1 x_k^1 + \beta^2 x_k^2}{x_k^1 + x_k^2} - 1 + \frac{\left[ \sum_{i=1}^2 t_i \frac{\partial x_i^1}{\partial I} + \sum_{i=1}^2 t_i \frac{\partial x_i^2}{\partial I} \right]}{x_k^1 + x_k^2}$$

(22.10)

समीकरण (22.10) का बायाँ पक्ष किसी आरंभिक कर-शून्य स्थिति से कर व्यवस्था के शुरू किए जाने के कारण वस्तु हेतु 'कुल प्रतिपूर्ति माँग' में आनुपातिक परिवर्तन मापता है। चूँकि वसूला गया राजस्व धनात्मक (यथा,  $R > 0$ ) होना चाहिए, प्रतिपूर्ति माँग में परिवर्तन ऋणात्मक है। दाएँ पक्ष का प्रथम भाग (समीकरण 22.10 में) दर्शाता है कि

प्रतिपूर्ति माँग में परिवर्तन ( $\lambda$ ) जितना कम होगा,  $\beta^1 \frac{x_k^1}{x_k^1 + x_k^2} + \beta^2 \frac{x_k^2}{x_k^1 + x_k^2}$  उतना

ही अधिक होगा। यदि  $k$  कोई गरीबोन्मुखी वस्तु है और व्यक्ति-1 ही निर्धन व्यक्ति है, और सामाजिक नियोजनकर्ता अपने सामाजिक क्षेम फलन, यथा  $\beta^1 > \beta^2$  में गरीब

अर्थात् निर्धन व्यक्ति को अधिक महत्त्व देता है तो पद  $\beta^1 \frac{x_k^1}{x_k^1 + x_k^2} + \beta^2 \frac{x_k^2}{x_k^1 + x_k^2}$

उच्चतर मान लेगा क्योंकि  $\beta^h$  और  $\frac{x_k^h}{x_k^1 + x_k^2}$  के बीच सहसंबंध बढ़ेगा। इस प्रकार,

प्रतिपूर्ति माँग में परिवर्तन निम्न होगा, यदि वस्तु  $k$  प्रमुखतः निर्धन परिवार द्वारा उपभोग की जाती हो। यही है समता सरोकार का संकेत। समीकरण (22.10) में दाएँ पक्ष का द्वितीय पद यह इंगित करता है कि प्रतिपूर्ति माँग में परिवर्तन निम्न होगा यदि माँग प्रमुखतः आय प्रभाव द्वारा नियंत्रित होती हो। द्वितीय पद कराधान के दक्षता पक्ष अथवा आय में कमी के कारण माँग में परिवर्तन को इंगित करता है। यह दर्शाता है कि राजस्व लक्ष्य बनाए रखने के लिए उसकी सहबद्ध वृहत्तर विकृतियों के साथ उच्चतर कर दरें लाने की आवश्यकता है।

### 22.2.3 कोष की सीमांत दक्षता लागत (MECFs)

रामसे कर नियम के साथ अनुप्रयोग स्वरूप, हम सीमांत कर सुधार पर विचार कर सकते हैं जिसका अर्थ है— कर दरों की विद्यमान शृंखला में मामूली परिवर्तन कर अभीष्टता की ओर बढ़ना। अभीष्टतम करों की अपेक्षा सीमांत कर सुधारों को परिकल्पित करना कहीं अधिक सरल होता है क्योंकि यहाँ हम केवल परिवर्तन के प्रभाव का मूल्यांकन करते हैं, न कि समस्त परिवर्तन का। वस्तु  $k$  पर कर में परिवर्तन के कारण क्षेम में परिवर्तन निम्नवत् दर्शाया जाता है —

$$\frac{\partial W}{\partial t_k} = \sum_{h=1}^2 \frac{\partial W}{\partial U^h} \frac{\partial U^h}{\partial q_k} \frac{\partial q_k}{\partial t_k} = \sum_{h=1}^2 \frac{\partial W}{\partial U^h} (-\alpha^h x_k^h) = -\sum_{h=1}^2 \beta^h x_k^h \quad (22.11)$$

राजस्व पर प्रभाव निम्नवत् दर्शाया जाता है —

$$\frac{\partial R}{\partial t_k} = \sum_{h=1}^2 \left[ x_k^h + \sum_{i=1}^2 t_i \frac{\partial x_i^h}{\partial q_k} \right] = X_k + \sum_{i=1}^2 t_i \frac{\partial X_i}{\partial q_k} \quad (22.12)$$

जहाँ  $X_i$  ही वस्तु  $i$  हेतु कुल माँग है। 'कोष की सीमांत दक्षता लागत' को इन शब्दों में परिभाषित किया जाता है— 'किसी कर में किसी सीमांत वृद्धि से उत्पन्न अतिरिक्त राजस्व के सापेक्ष संसाधन आवंटन की विकृति के कारण सामाजिक क्षेम में परिवर्तन।' इसे निम्नवत् लिखा जा सकता है —

$$MECF_k = -\frac{\partial W / \partial t_k}{\partial R / \partial t_k} = \frac{-\bar{x}_k}{\partial R / \partial t_k} = \frac{\bar{x}_k}{\partial R / \partial t_k} \quad (22.13)$$

जहाँ  $\bar{x}_k$  क्षेप में परिवर्तन को मापता है और '-' चिन्ह का अभाव 'निरपेक्ष मान के ही अर्थ में दर्शाता है। अभीष्टतम रूप से, सभी वस्तुओं की एक समान ही कोष की सीमांत लागत होनी चाहिए, यथा यदि  $MCF_1 > MCF_2$  तो वस्तु-1 पर कर घटा दिया जाना चाहिए और वस्तु-2 पर कर बढ़ा दिया जाना चाहिए। यहाँ  $MCF$  आकलित करने के लिए हमें  $\beta^h$  का मूल्यांकन करना पड़ता है, वस्तु  $k$  हेतु माँग,  $x_k$  और  $\frac{\partial x_k}{\partial t_k}$  जो कि

अनुमानित कीमत लोचशीलताओं (अपनी और विरुद्ध दोनों) पर निर्भर करता है।  $\beta^h$  साम्या हेतु सरोकार को मापता है। उपयोगिता फलन का एक सामान्य रूप है  $U^h = K \frac{(M^h)^{1-\varepsilon}}{1-\varepsilon}$ ,  $\varepsilon \neq 1$ , जहाँ प्राचल  $\varepsilon$  नीति-निर्माता के क्षेप संबंधी निर्णयों का प्रग्रहण

करता है। इस  $\varepsilon > 0$  के लिए उपयोगिता फलन अवतल हो जाता है। चूँकि उपयोगिता फलन की अवतलता की कोटि  $\varepsilon$  के मान पर निर्भर करती है, जैसे ही  $\varepsilon$  बढ़ता है, उपयोगिता फलन और अधिक अवतल हो जाता है। यह दर्शाता है कि नीति-निर्माता निर्धनतर कुटुंब को अपेक्षाकृत अधिक महत्त्व दे रहा है। चूँकि  $\beta^h = K(M^h)^{-\varepsilon}$ , एक संभावना यह है कि  $K$  का मान  $\beta^h$  को निम्नतम-आय उपभोक्ता हेतु 1 रखकर निर्धारित किया जा सकता है।

रॉय, रायचौधरी एवं सिन्धारॉय (2010) ने वर्ष 1991-00 के भारतीय राष्ट्रीय निदर्श सर्वेक्षण संगठन (NSSO) के आँकड़ों का प्रयोग विभिन्न वस्तुओं के लिए कर सीमांत लागत फलन (MCF) आकलित किया है। यदि सभी परिवारों को समान महत्त्व दिया जाए तो  $MCF$  मान केवल दक्षता नियम को ही दर्शाएगा। सभी  $h$  के लिए  $\beta^h = 1$  निर्धारित कर,  $MCF$  इस पद  $MCF_k = \frac{\bar{x}_k}{\partial R / \partial t_k}$  प्रयोग कर आकलित किया गया। सभी व्यक्तियों को समान महत्त्व देते हुए MCFs के आकलित मानों ने दर्शाया कि VAT लगाने समय, नीति-निर्माता दक्षता सिद्धांत के आधार पर कर दरें चुनते हैं।

**बोध प्रश्न 1** (दिए गए स्थान में अपना उत्तर लगभग 50-100 शब्दों में लिखें।)

- 1) 'लोक नीति की वितरणात्मक भूमिका' का उद्देश्य बताएँ।

.....

.....

.....

.....

.....

- 2) 'कर की नितांत हानि' को परिभाषित करें।

.....

.....

.....

.....

- 3) 'किसी उपभोक्ता की आय संबंधी सामाजिक सीमांत उपयोगिता' हेतु वियोजित पदबंध लिखें। इसके तीन उप-पदबंधों के निहितार्थ स्पष्ट करें।

- 4) सीमांत लागत फलन (MECF) परिभाषित करें। फलन के रूप में इसका पदबंध लिखें।

## 22.3 वितरणात्मक भूमिका के मूल्यांकन हेतु परिमाणात्मक उपाय

किसी वितरणात्मक सिद्धांत ने कर-नीति अभिकल्पन में कोई भूमिका निभाई अथवा नहीं, यह बात लॉरेंज वक्र, संकेंद्रण वक्र, ऐंजल वक्रों एवं उपभोग प्रबलता वक्रों जैसे आरेखीय साधनों का प्रयोग कर जाँची जा सकती है। इस संदर्भ में, जैसा कि हम जानते हैं, पैरेटो दक्षता एक ऐसी आर्थिक दशा है जिसमें संसाधन आवंटन इस अर्थ में अभीष्टतम होता है कि किसी एक व्यक्ति का क्षेम किसी अन्य व्यक्ति का क्षेम कम किए बिना नहीं बढ़ाया जा सकता। पैरेटो दक्ष संतुलन अनन्य नहीं होता क्योंकि इस धारणा का कोई कारण नहीं है कि यह संतुलन किसी भी अर्थ में समतापूर्ण होता है। इसका अर्थ है कि जब कभी सरकार को लगता है कि पैरेटो अभीष्टतम परिणाम विषमतापूर्ण है तो वह एक पैरेटो दक्ष बिंदु से दूसरे पैरेटो दक्ष बिंदु की ओर अर्थव्यवस्था को ले जाने हेतु हस्तक्षेप कर सकती है। इसके लिए, सामाजिक क्षेम फलन हमें ऐसी आर्थिक नीतियाँ तय करने की आज्ञा दे सकते हैं जो एक आर्थिक अभिकर्ता से दूसरे अभिकर्ता को क्षेम पुनर्वितरित करें। कोई भी सामाजिक क्षेम फलन, हमें समता के साथ-साथ दक्षता संबंधी मुद्दों पर विचार करने में सक्षम करता है। तथापि, ऐसे अन्य साधन भी हैं जो इस प्रकार के आर्थिक नीति विश्लेषण हेतु प्रयोग किए जा सकते हैं। बेशक, ये आदर्श सामाजिक क्षेम फलन की वांछनीयताएँ पूरी नहीं करते, इन्हें व्यवहारतः प्रयोग में लाना अपेक्षाकृत सरल होता है। किसी अर्थव्यवस्था में असमानता जितनी अधिक होगी, उतना ही अधिक वहाँ लोकनीति की वितरणात्मक भूमिका का महत्त्व होगा। लॉरेंज वक्र का प्रयोग क्षेम आधार पर विभिन्न आय वितरणों का अनुक्रम तय करने हेतु एक साधन स्वरूप किया जा सकता है।

### 22.3.1 लॉरेंज वक्र

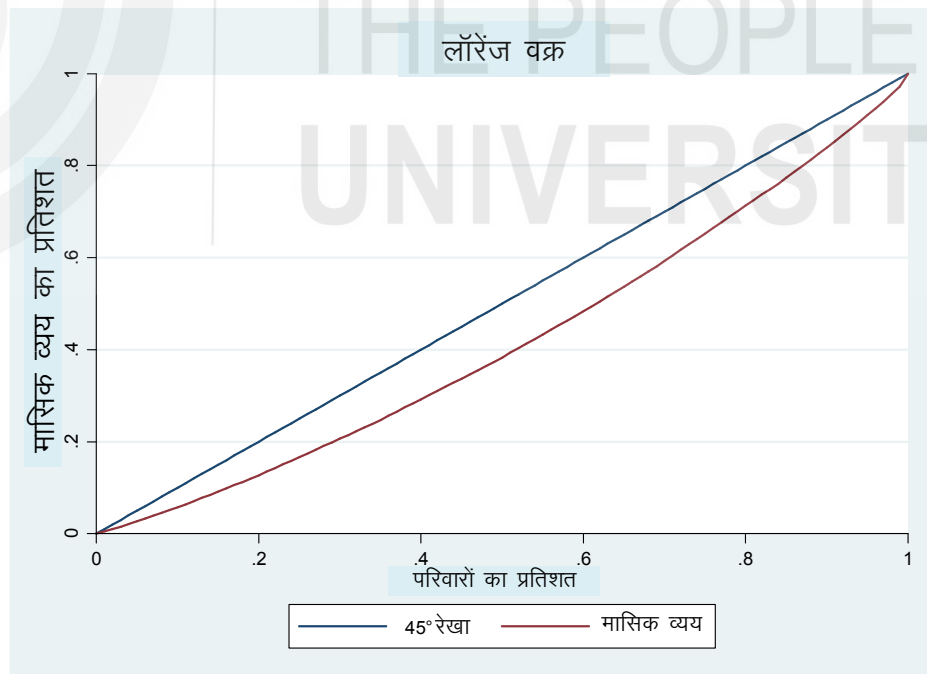
लॉरेंज वक्र किसी आय वितरण के संक्षिप्त निरूपण प्रस्तुत करने हेतु एक उपयोगी आरेखीय युक्ति है। यह आय/व्यय असमानता सोदाहरण समझाने व औरों से तुलना

करने हेतु एक सबसे लोकप्रिय आरेखीय साधन है। यह मध्यमान के सापेक्ष आय/व्यय के वितरण पर परिपूर्ण जानकारी प्रदान करता है और अतएव सापेक्ष जीवन-स्तर का कहीं अधिक व्यापक विवरण प्रस्तुत करता है। यह असमानता की दृष्टि से वितरणों का अनुक्रम तैयार करने में सहायक सिद्ध होता है। कोई भी लॉरेंज वक्र सदैव (0,0) से आरंभ हो (1,1) पर समाप्त होता है। यह वक्र खींचने के लिए सर्वप्रथम आय के आँकड़े छोटकर आरोही क्रम में लगाने होते हैं और फिर y-अक्ष के एक ओर से दूसरी ओर तक आय/व्यय का संचयी अनुपात अंकित करना होता है। आय/व्यय अंश कुल आय/व्यय द्वारा जनसंख्या के किसी ज्ञात अंश के संचयी आय/व्यय को विभाजित कर आकलित किए जाते हैं। तदनुसार –

$$L\left(\frac{k}{P}\right) = \frac{\sum_{i=1}^k y_i}{Y} \quad (22.14)$$

जहाँ  $k$  (1,2,...,n) और  $i$  (1,2,...,k) दोनों आय वितरण में लोगों की स्थितियाँ हैं,  $P$  वितरण में लोगों की कुल संख्या है और  $y_i$  वितरण में  $i$ वें व्यक्ति की आय है।  $\sum_{i=1}^k y_i$  ही  $k$ वें व्यक्ति तक संचयी आय है, जिसका मान 0 से आरंभ होता है, जहाँ  $k=0$ , और  $Y$

तक जाता है, जहाँ  $k=n$ । इसीलिए,  $L\left(\frac{k}{P}\right) = \frac{\sum_{i=1}^k y_i}{Y}$  का मान 0 और 1 के बीच रहता है। चित्र 22.2 में  $45^\circ$  रेखा समानता की रेखा है और लॉरेंज वक्र व्यय असमानता मापता है। इन दोनों के बीच दूरी जितनी अधिक होगी, असमानता भी उतनी ही अधिक होगी। कोई भी ऐसी आर्थिक नीति जो लॉरेंज वक्र को  $45^\circ$  रेखा की ओर खिसका दे, असमानता घटाकर आय अथवा व्यय के वितरण को सुधार देगी।



चित्र 22.2 : लॉरेंज वक्र

### 22.3.2 संकेंद्रण वक्र

लॉरेंज वक्र के साथ-साथ संकेंद्रण वक्र भी वितरणात्मक आधार पर सार्वजनिक कर-नीति का मूल्यांकन करने के लिए प्रयोग किए जाते हैं। सामाजिक क्षेम पर कर-प्रभावों से



संबद्ध क्षैतिज एवं ऊर्ध्वस्थ दोनों समता संकल्पनाओं का प्रग्रहण कर, संकेंद्रण वक्र कर-प्रभाव एवं हस्तांतरण नीतियों का मूल्यांकन करने में उपयोगी एक महत्वपूर्ण नियामक एवं व्याख्यात्मक उपकरण सिद्ध होता है। इस संकेंद्रण वक्र को निम्नवत् परिभाषित किया जाता है –

$$T = \int QT(p)d(q) \quad (22.15)$$

यह जनसंख्या के एक छोर से दूसरे छोर तक औसत कर है। ध्यान दें कि  $QT(p)$  निवल करों का  $p$ -पंचमक फलन है और  $T(q)$   $q$ वें पंचमक हेतु प्रत्याशित निवल कर है। चूँकि जनसंख्या आकार 1 पर सामान्यीकृत है,  $QT(p)$  जनसंख्या के निम्न  $p$  अनुपात द्वारा चुकाए गए करों का अंश दर्शाता है।  $X$  और  $N$  क्रमशः सकल और निवल आय इंगित करते हैं। सामान्य प्रयोग में, संकेंद्रण वक्र सकल आय के वर्धमान मानों वाली 'n' निदर्श समुक्तियों की किसी शून्येतर संख्या  $(X_1; N_1), \dots, (X_n; N_n)$  द्वारा आकलित किए जाते हैं; जैसे कि  $X_1 \leq X_2 \leq \dots \leq X_n$ , जो कि प्रतिशतकों  $p_i = i/n$ ; के साथ है; जहाँ  $i=1, \dots, n$ . तब करों  $T_i = X_i - N_i$  हेतु निदर्श अथवा आनुभविक संकेंद्रण वक्र को निम्नवत् परिभाषित किया जाता है—

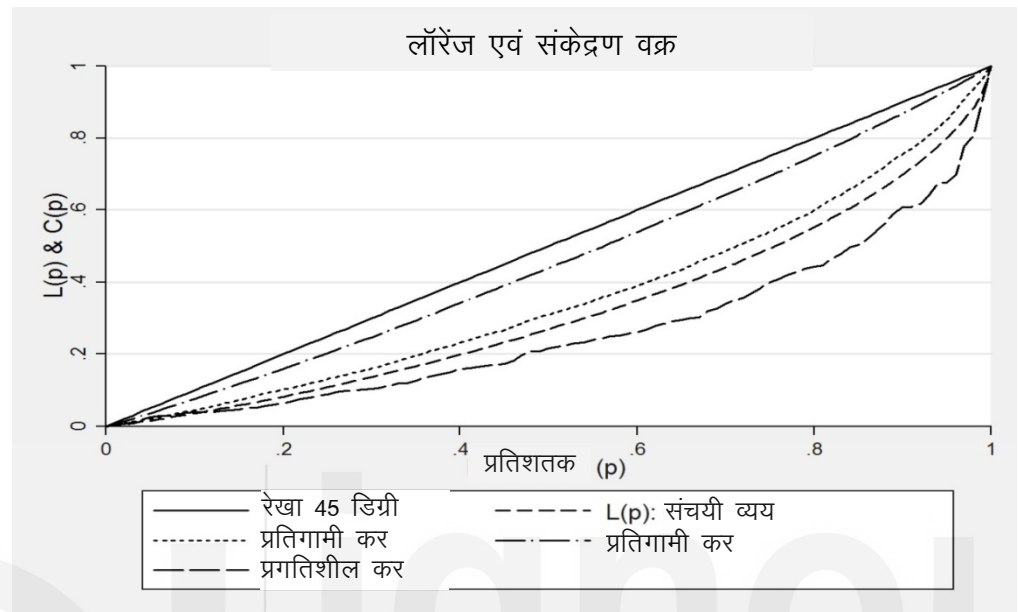
$$C_T(p = i/n) = \frac{1}{n\mu_T} \sum_{j=1}^i T_j \quad 22.15(a)$$

यदि कर दर नियत हो तो 'व्यय संकेंद्रण वक्र' ठीक 'कर संकेंद्रण वक्र' की भाँति ही होगा। व्यय संकेंद्रण वक्र विभिन्न वस्तुओं पर वैट अथवा जीएसटी (VAT/GST) की भाँति किसी कर की प्रगतिशीलता/प्रतिगामिता का विश्लेषण करने के लिए प्रयोग किया जाता है। यह कर परिवर्तन के वितरणात्मक प्रभाव पर विचार करता है। संकेंद्रण वक्र कर-पूर्व आय द्वारा श्रेणीकृत जनसंख्या के अनुपातानुसार कर-पश्चात् आय, व्यय अथवा कर भुगतान अंकित करते हैं। संकेंद्रण वक्र, लॉरेंज वक्र की भाँति, केंद्रबिंदु से ही गुजरता है। परंतु लॉरेंज वक्र से भिन्न, उसे सदा वर्धमान रहने की आवश्यकता नहीं होती। इसकी वक्रता व्यय संकेंद्रण वक्रों हेतु वस्तु की आय की लोच पर निर्भर करती है। व्यय संकेंद्रण वक्र प्रगतिशीलता का विश्लेषण करने के लिए प्रयोग किए जा सकते हैं। यदि किसी एक वस्तु का संकेंद्रण वक्र किसी अन्य वस्तु के संकेंद्रण वक्र से ऊपर हो तो, प्रथम वस्तु दूसरी वस्तु पर अभिभावी होती है। तथापि, यदि संकेंद्रण वक्र प्रतिच्छेद करते हों तो अभिभाविता दर्शाना संभव नहीं होता। यदि कर दर नियत हो तो 'व्यय संकेंद्रण वक्र' ठीक 'कर संकेंद्रण वक्र' जैसे ही होंगे। चूँकि सभी  $j$  के लिए  $t_j = t$ , कर संकेंद्रण वक्र निम्नवत् व्यय संकेंद्रण वक्र बन जाता है –

$$C_T(p = i/n) = \frac{1}{nt\bar{X}} \sum_{j=1}^i tX_j = \frac{1}{n\bar{X}} \sum_{j=1}^i X_j = C_X(p = i/n), \quad t_j = t \quad \text{सभी } j \text{ के लिए} \quad (22.15(b))$$

यद्यपि क्षेम प्राधान्य विषयक निष्कर्ष कुल आय वितरण से संबद्ध होते हैं, यदि हमारी रुचि निर्धनतम के क्षेम में हो तो हमें निर्धनतम पर (यथा, जनसंख्या के निम्नतम  $x$ -प्रतिशत पर) कर परिवर्तन के प्रभाव पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। ऐसा निर्दिष्ट निर्धनता अनुपात के बाईं ओर के क्षेत्र में लॉरेंज अथवा संकेंद्रण वक्रों के व्यवहार की जाँच द्वारा किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, जहाँ विभिन्न करों के लिए संकेंद्रण वक्र एक-दूसरे को काटते हैं, जनसंख्या अनुक्रम में अपेक्षाकृत ऊपर रहने वाले प्रतिच्छेदन बिंदु के साथ, एक कर अब भी उस समय तक असंदिग्ध रूप से अधिमान्य हो सकता है जब तक कि वह जनसंख्या के निर्धनतम  $x$ -प्रतिशत के अनुकूल हो। यदि संकेंद्रण वक्र लॉरेंज वक्र से ऊपर और  $45^\circ$  वक्र से नीचे हो तो कर साधन को पश्चगामी के रूप में वर्गीकृत किया जाता है, यथा संबद्ध कराधीन उपयोग वस्तु का प्रभाव निम्नतर आय वर्गों पर अधिक संकेंद्रित रहता है। इसी प्रकार, प्रगतिशील कर के लिए, यदि संकेंद्रण वक्र लॉरेंज वक्र को प्रतिच्छेद करता है तो धनाढ्य वर्ग द्वारा वहन

किया जाने वाले भार का अंश उनकी आय के अंश से कहीं अधिक होता है। यदि कोई परोक्ष कर असंदिग्ध रूप से प्रगतिशील होता है (यथा, इसका संकेन्द्रण वक्र पूरी तरह व्यय हेतु संकेन्द्रण वक्र (यथा, लॉरेंज वक्र) से बाहर अवस्थित होता है) तो इसका अर्थ होगा कि निर्धन वर्ग व्यय के अपने अंश की अपेक्षा अनुपातिक रूप से कम कर चुकाते हैं।



चित्र 22.3 : लॉरेंज-संकेन्द्रण वक्र द्वारा कर

कर नीतियाँ अभिकल्प करने में, नीति-निर्माता वस्तुओं के विभिन्न समूह बनाते हैं। उदाहरण के लिए, भारत में वस्तु एवं सेवा कर (GST) अभिकल्प इस प्रकार का है कि इसमें छह विभिन्न एवं उत्तरोत्तर वर्धमान कर दरों (यथा, 0%, 3%, 5%, 12%, 18% और 28%) के साथ छह वस्तु-समूह हैं। इस प्रकार के वस्तु-समूह का विश्लेषण करने के लिए साधन स्वरूप ऐंजल वक्र प्रयोग किए जा सकते हैं।

### 22.3.3 ऐंजल वक्र

ऐंजल वक्र यह बतलाता है कि किसी वस्तु विशेष अथवा सेवा पर पारिवारिक व्यय किस प्रकार कुल पारिवारिक व्यय पर निर्भर करता है। ऐंजल के नियमानुसार, कोई परिवार जितना अधिक निर्धन होगा उतना ही बड़ा खाद्य वस्तुओं पर उसका आय-व्यय का अंश होगा। इसीलिए, मुख्य कार्य परिवार के कुल व्यय और किसी वस्तु विशेष पर किए गए व्यय के प्रकार के बीच संबंध का परिणाम निकालना होता है। इसकी मदद से, उपभुक्त वस्तुओं पर दृष्टिपात कर उपभोग के स्तर का वास्तव में वर्णन किया जा सकता है। इस विश्लेषण की तुलना जब वर्तमान कर आधार से की जाती है तो इससे यह समझने में मदद मिलती है कि क्या वस्तुएँ इस तरीके से कराधीन हैं कि निर्धनतर परिवारों को सहारा मिले अथवा नहीं। सैद्धांतिक रूप से, किसी भी ऐंजल वक्र के लिए दो प्रकार के प्रावण्य देखे जाते हैं – (i) ऋणात्मक रूप से प्रवण ऐंजल वक्र, जो कि यह दर्शाता है कि वस्तु निर्धन वर्ग द्वारा अधिक उपभोग की जाती है; और (ii) धनात्मक रूप से प्रवण ऐंजल वक्र, जो कि यह दर्शाता है कि कोई वस्तु प्रमुखतः धनाढ्य वर्ग के लिए है, यथा, वस्तु का उपभोग आय-व्यय अनुपात बढ़ने के साथ ही बढ़ता है।

कुछ उदाहरणों में, कोई अवतल-प्रवण ऐंजल वक्र दो संभावनाएँ दर्शा सकता है— प्रथम, या तो वस्तु विशेष एक आवश्यक वस्तु है (जो कि अमीर और गरीब दोनों वर्गों द्वारा उपभोग की जाती है), परंतु वह अपनी कीमत पर निर्भर करते हुए परिवर्ती गुणवत्ता दर्शाती है; दूसरे, यदि कोई किसी आय-स्तर विशेष पर विचार करता है तो एक अवतल-प्रवण वक्र यह इंगित कर सकता है कि किसी आय स्तर पर, उपभोग वृद्धि एक संतृप्ति

स्थिति में पहुँच जाता है और फिर ह्रासोन्मुखी हो जाती है। अतएव, हम ऐंजल वक्र के दो अनुप्रयोग निम्नवत् प्रस्तुत कर सकते हैं—

- **सर्वप्रथम**, ऐंजल वक्र निर्धारित करेगा कि निर्धन कुटुंब किस प्रकार की वस्तु का उपभोग करते हैं। यह ऐसा परिवार की बदलती आय/व्यय के साथ व्यय के बदलते अंश दर्शा कर करता है। इस आधार पर, हम वस्तुओं को इन समूहों में रख सकते हैं— आवश्यक वस्तुएँ, विलास-वस्तुएँ और सामान्य वस्तुएँ। तदनुसार, वस्तुओं को विभिन्न वर्गों के अनुसार, समूहन में मदद करके और इसकी तुलना विभिन्न कर समूहों द्वारा उपभोग की जाने वाली वस्तुओं से करके, यह हमें यह जाँच करने में सक्षम करता है कि वस्तु कर समूहन वितरणात्मक न्याय पर आधारित है अथवा नहीं।
- **द्वितीय**, हम यह दर्शाते हुए किसी कर प्राधार के वितरण भाग को सबसे पहले रेखांकित कर सकते हैं (संकेंद्रण वक्र का प्रयोग कर) कि किसी वस्तु विशेष के लिए कर में कोई वृद्धि प्रगतिशील है अथवा प्रतिगामी। इस प्रकार की वस्तु पर कर वृद्धि जब ऐंजल वक्र के प्रावण्य पर आधारित गरीब आदमी की वस्तु के रूप में वर्गीकृत की जाती है तो इसे वांछित दिशा में कर प्राधार को बदलने के लिए प्रयोग किया जा सकता है।

कोई भी राजकोषीय उपाय, अर्थव्यवस्था में आय के वितरण में कुछ परिवर्तन ले आता है। कोई भी कर थोपे जाने पर लोगों से सरकार को आय हस्तांतरण की प्रक्रिया प्रारंभ कर देता है और इस प्रकार आय वितरण के विद्यमान प्रतिमान में बदलाव ला देता है। क्षेमोन्मुखी आर्थिक विचार के नितांत आरंभ से ही, विचारक एवं विद्वान कराधान के माध्यम से डाले गए भार के न्यायपूर्ण वितरण तथा सार्वजनिक व्यय के माध्यम से उत्पन्न लाभों के समुचित आवंटन पर जोर देते रहे हैं। इस प्रकार, किसी भी कर सुधार पर प्रमुख नियंत्रण वितरणात्मक दक्षता के विश्लेषण का होना चाहिए। कर नीति करोपरांत आय वितरण को कम असमान बनाने में एक मुख्य भूमिका निभा सकती है। कर साधन न सिर्फ राजस्व उगाहने के लिए महत्वपूर्ण होते हैं, बल्कि कर प्राधार को पहले से अधिक प्रगतिशील बनाकर निम्न-आय परिवारों को सहारा देने हेतु एक अत्यंत महत्वपूर्ण साधन भी सिद्ध होते हैं। इस लिहाज से, इस भाग में हमने जिन तीन वक्रों पर चर्चा की वे नीति साधनों के रूप में बहुत उपयोगी हैं।

## 22.4 लोक नीति और निर्धनता

एक अन्य आरेखीय साधन जिसे वितरणात्मक आधार पर लोक नीति के विश्लेषणार्थ प्रयोग किया जा सकता है, वह है — उपभोग प्रबलता वक्र। इसे प्रयोग कर हम यह जानने के लिए एक निर्धनता परीक्षण भी निर्दिष्ट कर सकते हैं कि कोई कर सुधार निर्धनता दूर करने वाला (यथा, उसका उन्मूलन करने वाला) है अथवा नहीं।

### 22.4.1 उपभोग प्रबलता वक्र

उपभोग प्रबलता ( $CD$ ) वक्र किसी भी वस्तु ( $k$ ) पर कर लगाने की 'नैतिकता' भारत लागत को दर्शाता है। ऐसा वह किसी ऐसे निर्धनता सूचकांक पर विचार करके करता है जिसका किसी वस्तु पर कर से संबंधित प्रथम अवकलज उपभोग प्रबलता का माप बताता हो। यहाँ, 'उपभोग प्रबलता' को 'कीमतों में परिवर्तनों हेतु निर्धनता प्रबलता में परिवर्तन' के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। अतः, यह मानते हुए कि वस्तु ' $k$ ' पर कर बढ़ा है, किसी वस्तु ' $k$ ' हेतु क्रम ' $s$ ' का  $CD$  वक्र निम्नवत् परिभाषित किया जाएगा—

$$CD_k^s(z) = \frac{\partial P^{s-1}(z)}{\partial t_k}, \quad s = 1, 2, 3, \dots \quad (22.16)$$

जहाँ  $P^{s-1}$  क्रम  $s-1$  का निर्धनता सूचकांक है। क्रम- $s$  का उपभोग प्रबलता वक्र क्रम  $s-1$  के निर्धनता प्रभाविता वक्र का प्रथम-क्रम अवकलज लेकर प्राप्त किया जा सकता है।

निर्धनता सूचकांक का सर्वाधिक लोकप्रिय मापदंड है— फॉस्टर-ग्रीयर-थॉरबेक (FGT) निर्धनता सूचकांक। यह सूचकांक निर्धनता अंतर संबंधी संकल्पना का प्रयोग करता है, जहाँ किसी समूह की आय किसी पूर्व-निर्धारित निर्धनता स्तर ( $Z$ ) से मापी जाती है। तदनुसार, यदि  $F(y)$  आय 'y' का संचयी वितरण हो तो FGT निम्नवत् परिभाषित किया जाता है –

$$P^{s-1}(z) = FGT^{s-1}(z) = \int_0^z \left( \frac{z-y}{z} \right)^{s-1} dF(y) \quad (22.17)$$

जहाँ प्राचल 's' प्रबलता के नैतिक क्रम अथवा 'निर्धनता के प्रति विमुखता' को इंगित करता है,  $FGT^0(Z)$  निर्धनता जनसंख्या अनुपात दर्शाता है और  $FGT^1(Z)$  सामान्यीकृत निर्धनता अंतर दर्शाता है। इसी प्रकार,  $FGT^2(Z)$  भारित सामान्यीकृत निर्धनता वक्र दर्शाता है। उपभोग प्रबलता वक्रों का शीर्ष अक्ष 'k' पर कर लगाए जाने की नैतिकतापूर्वक भारित लागत मापता है। हमारी रुचि यह जानने में है कि क्या कर सुधार की दिशा निर्धनता सूचकांकों एवं निर्धनता रेखाओं के किसी वर्ग हेतु निर्धनता घटाने की ओर है। उपभोग प्रबलता (CD) वक्र यहाँ उपयोगी रहते हैं क्योंकि उन्हें कीमतों में परिवर्तनों हेतु प्रबलता में परिवर्तन के रूप में परिभाषित किया जाता है। करों में पूर्ण बदलाव की कल्पना करते हुए, हमें सामान्यीकृत उपभोग प्रबलता (CD) वक्र निम्नवत् परिभाषित किया हुआ प्राप्त होता है—

$$\overline{CD}_k^s(z) = \frac{CD_k^s(z)}{x_k(p)} \quad (22.18)$$

जहाँ  $x_k(p)$  करोपरांत कीमत सदिश  $p$  पर वस्तु  $k$  का औसत उपभोग है (जो कि  $k$  के उपभोग की औसत क्षम लागत भी है)। इन वक्रों की व्याख्या, तदनुसार, औसत क्षम लागत के अनुपात स्वरूप 'k' पर कर लगाने की भारित सामाजिक लागत के रूप में की जा सकती है। यदि  $\bar{x}_k(y, p)$  औसत उपभोग के सापेक्ष 'k' का उपभोग हो [यथा,  $\bar{x}_k(p) = x_k(y, p)/x_k(p)$ ] तो –

$$\overline{CD}_k^s = \bar{x}_k(p) f(z) \quad \text{यदि } s=1 \quad (22.19)$$

$$= sz^{-s} \int_0^{\infty} \bar{x}_k(p) (z-y)^s dF(y) \quad \text{यदि } s>1 \quad (22.20)$$

जहाँ  $f(Z)$   $Z$  पर आय की घनता है। प्रथम-क्रम यादृच्छिक प्रबलता वक्र सीमांत कर परिवर्तन को उनके लिए जनसंख्या अनुपात से जोड़ते हैं जो निर्धनता रेखा पर या उसके आस पास होते हैं। द्वितीय-क्रम यादृच्छिक वक्र उनके लिए औसत निर्धनता अंतर पर सीमांत कर परिवर्तन का प्रभाव इंगित करते हैं जो निर्णायक निर्धनता रेखा से नीचे होते हैं। तृतीय-क्रम यादृच्छिक प्रबलता वक्र औसत निर्धनता अंतर के वर्ग पर सीमांत कर परिवर्तन का प्रभाव मापते हैं।

#### 22.4.2 निर्धनता परीक्षण

कोष की सीमांत दक्षता लागत (MECF) में समंजित सामान्यीकृत उपभोग प्रबलता वक्र निर्धनता पर कर परिवर्तन के प्रभाव की जाँच करने के लिए प्रयोग किए जाते हैं। वस्तु

‘ $k$ ’ पर कर बढ़ाकर एक इकाई राजस्व जुटाने की समग्र निर्धनता लागत को निम्नवत् परिभाषित किया जाता है –

$$\lambda_k^s(y, p) = E^k \overline{CD}_k^s \equiv \frac{\partial P^{s-1}(z)/\partial t_k}{\partial R/\partial t_k} \quad (22.21)$$

इस प्रकार, निर्धनता पर कर परिवर्तन का अंतिम प्रभाव वितरणात्मक लागत और दक्षता लागत का गुणनफल होता है। चर  $\overline{CD}_k^s$  का मान जितना अधिक होगा, वस्तु ‘ $k$ ’ पर वर्धमान कर की वितरणात्मक लागत उतनी ही अधिक होगी। पुनः,  $E^k$  का उच्चतर मान कर परिवर्तन की निम्नतर राजस्व प्रभाविता को इंगित करता है। दूसरे शब्दों में,  $E^k$  का मान जितना अधिक होगा, वस्तु ‘ $k$ ’ पर वर्धमान कर द्वारा धन उगाहने की आर्थिक दक्षता लागत उतनी ही अधिक होगी।

सरकारी बजट की राजस्व तटस्थता कायम रखते समय, किसी कर सुधार हेतु किसी आवश्यक एवं यथेष्ट दशा को  $s$ -क्रम निर्धनता सुधारकारी होने के लिए निम्नवत् दर्शाया जाता है –

$$\lambda_i^s(y) - \lambda_j^s(y) \geq 0 \quad \forall y[0, z] \quad (22.22)$$

निर्धनता परीक्षण संभावित निर्धनता रेखा के प्रसार क्षेत्र  $\forall y[0, z]$  तक सीमित रहता है। यहाँ  $Z$  निर्धनता का उच्चतम स्तर है। मान लीजिए, वस्तु ‘ $L$ ’ पर कर घटाया जाता है और वस्तु ‘ $j$ ’ पर कर बढ़ा दिया जाता है, दोनों अंशतः, ताकि परिवारों का उपभोग प्रतिमान में कोई सहसा परिवर्तन नहीं आ जाए। ऐसा सीमांत कर सुधार  $Z$  से नीचे के प्रत्येक गरीबी से नीचे होने की दशा में  $\overline{CD}_l$  गुणा MECF के  $\overline{CD}_j$  गुणा MECF के  $\overline{CD}_j$  गुणा MECF से ऊपर रहने पर गरीबी को घटा देगा। गुणित  $\overline{CD}_j$  मान वस्तुतः वस्तु  $j$  पर वर्धमान कर द्वारा बढ़े कर की प्रति सीमांत इकाई निर्धनता लागत है। जब यह क्षेत्र अपरिबद्ध हो, और अपने ही MECF द्वारा समंजित सामान्यीकृत CD वक्र किसी अन्य वस्तु के CD वक्र के ऊपर अवस्थित हो तो निर्धनता सुधार वैश्विक क्षेम सुधार की ओर विस्तारित हो जाता है। उक्त लागत (MECF) द्वारा समंजित दो सामान्यीकृत उपभोग प्रबलता वक्रों का प्रतिच्छेदन वह निर्णायक निर्धनता रेखा प्रदान करता है जहाँ तक एक वस्तु पर कर में वृद्धि और किसी अन्य वस्तु पर कर में कमी [जबकि सरकारी बजट राजस्व तटस्थता बनाए रखी जाती हो] निर्धनता घटाने वाली होती हैं। किसी भी  $Z = Z^*$  (निर्णायक निर्धनता रेखा) पर, MECF द्वारा समंजित वस्तु  $l$  हेतु सामान्यीकृत CD वक्र की ऊँचाई यह मापती है कि वस्तु  $l$  पर कर घटाए जाने पर क्षेम लाभ के प्रति रुपया निर्धनता कितनी कम हुई। इसी प्रकार, MECF द्वारा समंजित वस्तु ‘ $l$ ’ के सामान्यीकृत CD वक्र की ऊँचाई वस्तु ‘ $j$ ’ पर कर में वृद्धि के कारण निर्धनता में वृद्धि को मापता है। इन दोनों के बीच का अंतर क्षेम लाभ की प्रति रुपया निर्धनता में निवल गिरावट को मापता है।

**बोध प्रश्न 2** (दिए गए स्थान में अपना उत्तर लगभग 50–100 शब्दों में लिखें।)

- 1) लॉरेंज़ वक्र का पदबंध लिखें। यह किस प्रकार उपयोगी सिद्ध होता है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) कोई संकेंद्रण वक्र क्या अंकित करता है? क्या यह हमेशा एक वर्धमान फलन होता है?

3) लॉरेंज़ एवं संकेंद्रण वक्रों के आधार पर, किसी कर को प्रतिगामी कब माना जाता है?

4) लॉरेंज़ और संकेंद्रण वक्रों के आधार पर किसी कर को कब प्रतिगामी माना जाता है?

---

### 22.5 सार-संक्षेप

---

ग़रीब और अमीर दोनों को भिन्न प्रकार से प्रभावित करते विभिन्न कर उपायों के संदर्भ में, इस इकाई में, ग़रीब पर करोपरांत आय असमानता के प्रभाव को न्यूनतम करने हेतु हस्तक्षेप करने में सरकार की भूमिका पर चर्चा की गई। इस संदर्भ में, विचार करने के लिए समता और दक्षता दोनों ही विषय महत्त्वपूर्ण होते हैं। लोकप्रिय रामसे कर नियम, बहरहाल, केवल दक्षता मापदंडों पर ही विचार करता है। समता संबंधी सरोकारों को समंजित करने के लिए लॉरेंज़ वक्र एवं संकेंद्रण वक्र जैसे अन्य परिमाणात्मक साधन कारगर सिद्ध होते हैं। एक अन्य उपयोगी साधन है— ऐंजल वक्र, जिसका प्रावण्य यह इंगित करता है कि कोई वस्तु ग़रीब वर्ग द्वारा उपभोग की जाती है अथवा अमीर वर्ग द्वारा। इसी कारण, यह वस्तु उपभोग के किसी समूहन पर आधारित वांछित दिशा में किसी वस्तु कर को बदलने के लिए उपयोगी साबित होती है। इस संदर्भ में, उपभोग प्रबलता वक्र एक अन्य महत्त्वपूर्ण नीति-साधन है जो यह विश्लेषण करने में मददगार

सिद्ध होता है कि क्या कोई थोपा गया कर वितरणात्मक आधार पर न्यायोचित है। उपभोक्ता प्रबलता वक्र, दरअसल, निर्धनता सूचकांक के साधन स्वरूप भारत सामान्यीकृत निर्धनता अंतर पर विचार कर अपने निर्माण में एक नैतिकतापूर्ण व्यवस्था ले आता है।

## 22.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- 1) Myles, G.D. and J. Hindriks (2006). *Intermediate Public Economics* (Cambridge: MIT Press) [ISBN 9780262083447].
- 2) Mayshar, Joram and Shlomo Yitzhaki (1995). *Dalton-Improving Indirect Tax Reform*, *American Economic Review*, 85 (4): 793-807.
- 3) Yitzhaki, Shlomo and Jeffrey Lewis (1996). Guidelines on Searching for a Dalton-Improving Tax Reform: An Illustration with Data from Indonesia, *The World Bank Economic Review*, 10 (3): 541-62.
- 4) Bibi, Sami and Jean-Yves Duclos (2007). Poverty-Decreasing Indirect Tax Reforms: Evidence from Tunisia, *International Tax and Public Finance* 14:165-190.
- 5) Roy, P., Raychaudhuri, A. and Sinha, S.K. (2010). Is Value Added Tax (VAT) Reform in India Poverty Improving? An Analysis of Data from Five Major States, 45(1): 131-158 (New Series).

## 22.7 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

### बोध प्रश्न 1

- 1) आदर्शतः, किसी भी कर नीति में 'समता' और 'दक्षता' संबंधी दोनों कारकों को ध्यान में रखना चाहिए। तथापि, कोई भी ऐसी कर नीति जो दक्ष हो, प्रायः अन्यायपूर्ण होती है। ऐसे समय पर, सरकार को समता सुनिश्चित करने हेतु हस्तक्षेप की आवश्यकता पड़ती है। वह ऐसी नीति बना सकती है जिसके द्वारा क्षेम को पुनर्वितरित किया जाए। ऐसी स्थिति में सरकार की भूमिका 'लोकनीति की वितरणात्मक भूमिका' कहलाती है। प्रमुखतः गरीब लोगों द्वारा उपभोग की जाने वाली वस्तुओं पर कर घटाना एक ऐसा उदाहरण है जिसके द्वारा इस वितरणात्मक भूमिका को सरकार द्वारा निभाए जाने की कल्पना की जाती है।
- 2) उपभोक्ता वर्ग उच्च कर युक्त वस्तु से किसी निम्न कर युक्त वस्तु की ओर उपभुक्त वस्तुओं को प्रतिस्थापित कर सकता है। इससे प्रतिस्थापन प्रभाव के फलस्वरूप सरकार के राजस्व में कमी आती है जबकि ऐसा न करने से उपभोक्ता क्षेम में गिरावट आएगी। कर की नितांत हानि ही वह सीमा है जहाँ तक क्षेम हानि इस प्रकार के प्रतिस्थापन प्रभाव के कारण सरकार के लिए राजस्व में नहीं बदलती (22.2.1)।
- 3)

$$\frac{\sum_{i=1}^2 t_i S_{ki}^1 + \sum_{i=1}^2 t_i S_{ki}^2}{x_k^1 + x_k^2} = \frac{1}{\lambda} \frac{\beta^1 x_k^1 + \beta^2 x_k^2}{x_k^1 + x_k^2} - 1 + \frac{\left[ \sum_{i=1}^2 t_i \frac{\partial x_i^1}{\partial I} + \sum_{i=1}^2 t_i \frac{\partial x_i^2}{\partial I} \right]}{x_k^1 + x_k^2}$$

इसका बायाँ पक्ष 'कुल क्षतिपूर्ति माँग' मापता है। दाएँ पक्ष का प्रथम पद दर्शाता है कि यदि प्रतिपूर्ति माँग में परिवर्तन कम होगा तो माँग प्रमुखतः आय प्रभाव द्वारा नियंत्रित होगी। दाएँ पक्ष का द्वितीय पद यह इंगित करता है कि राजस्व

स्तर कायम रखने के लिए, अपनी सहबद्ध विकृतियों के साथ उच्चतर कर दरें लाए जाने की आवश्यकता है।

- 4) MECFs को किसी कर में किसी सीमांत वृद्धि हेतु उत्पन्न अतिरिक्त राजस्व के सापेक्ष संसाधन आवंटन की विकृति के कारण सामाजिक क्षेम में परिवर्तन के रूप में परिभाषित किया जाता है (समीकरण 22.1.3)।

### बोध प्रश्न 2

- 1) समीकरण (22.14)। यह औसत के सापेक्ष आय/व्यय के वितरण विषयक परिपूर्ण जानकारी प्रदान करता है और इस प्रकार सापेक्ष जीवन-स्तर का एक कहीं अधिक व्यापक विवरण प्रस्तुत करता है। यह असमानता के लिहाज से वितरण के अनुक्रमक तैयार करने में मदद करता है।
- 2) संकेंद्रण वक्र करपूर्व आय द्वारा श्रेणीबद्ध जनसंख्या के अनुरूप करोपरांत आय-व्यय अथवा कर भुगतान अंकित करते हैं। इसकी वक्रता वस्तु की आय लोच पर निर्भर करती है।
- 3) यदि संकेंद्रण वक्र लॉरेंज वक्र से ऊपर से और 45° वक्र से नीचे, तो कर उपाय को प्रतिगामी माना जाता है।
- 4) यह वस्तुओं को आम इस्तेमाल, आवश्यक इस्तेमाल एवं विलासपूर्ण प्रयोग में समूहकृत करने में मदद करता है। वस्तुओं के इस समूहन की तुलना जब निर्धन परिवारों के उपभोग समुच्चय से की जाती है तो इससे यह निर्धारित करने में मदद मिलती है कि कोई वस्तु कर वितरणात्मक न्याय करता है अथवा नहीं। एक अन्य विधि, जिसमें इससे यह निर्धारित करने के बाद (संकेंद्रण वक्र प्रयोग कर) कि कोई वस्तु कर विशेष स्वभावतः प्रगतिशील है अथवा प्रतिगामी, कर की दिशा परिवर्तन में मदद मिलती है।

THE PEOPLE'S  
UNIVERSITY